राजस्थान विधान सभा

१४वीं बैठक, शनिवार, दिनांक २७ अक्टूबर, १९५६

विधान सभा की बैठक सभा भवन, जयपुर, में मध्यान्ह
११ बज कर १६ मिनिट पर प्रारम्भ हुई

(श्री नरोत्तमलाल जोशी, अध्यक्ष, पदासीन)

श्री अध्यक्ष—Yes, Legislative business.

(विराम)

राजस्थान नगर मण्डल वैधकरण विधेयक, १९५६

(विचारार्थ एवं पारित)

श्री भैरोंसिहजी बोलेंगे ?

श्री दामोदरलाल व्यास—उनके भाषण करने का दूसरा मौका आयेगा ।

श्री भैरू ंसिंह (१६)—और लोग आ जायें तब तक मैं अपने विचार रख दूं ।

श्री दामोदरलाल व्यास—आ गये हैं साहब, वे तो नहीं बोलेंगे शायद ।

श्री अध्यक्ष—Why, there is no trouble? Because the opposition is so tamed.

श्री दामोदरलाल व्यास—No, Sir, opposition is very co-operative.

श्री अध्यक्ष—श्री मानसिंह महार ।

(अनुपस्थित)

श्री भैरू ंसिंह—आये नहीं हैं लोग ।

श्री अध्यक्ष—I will go by the clock.

प्रश्न यह है कि राजस्थान नगर मंडल वैधकरण विधेयक, १९५६ को विचारार्थ लिया जाय ?

(स्वीकृत)

[श्री अध्यक्ष]

राजस्थान नगर मंडल वैधकरण विधेयक, १६५६ विचारार्थ लिया जाता है ।

(विराम)

खंडशः विचार-विमर्श, श्री हरिकृष्ण व्यास ।

(अनुपस्थित)

श्री दामोदरलाल व्यास—अध्यक्ष महोदय, मैं प्रस्ताव करता हूं कि म्युनिसिपल वैधकरण विधेयक, १६५६ को पारित किया जाय ।

श्री भैरूंसिंह—नगर मंडल वैधकरण विधेयक ।

श्री दामोदरलाल व्यास—जी हां । नगर मंडल वैधकरण विधेयक ।

श्री अध्यक्ष—आपने बोलना बन्द कर दिया इसलिये ये इनअटेन्टिव हैं ।

(हंसी)

प्रस्ताव प्रस्तुत हुआ ।

(विराम)

प्रश्न यह है कि राजस्थान नगर मंडल वैधकरण विधेयक, १९५६ को पारित किया जाय ?

(स्वीकृत)

राजस्थान नगर मंडल वैधकरण विधेयक, १६५६ पारित हुआ ।

माननीय सदस्यों के विदाई भाषण एवं श्री अध्यक्ष द्वारा प्रथम विधान सभा के कार्य के संक्षिप्त व्योरे की प्रस्तुति

श्री मोहनलाल सुखाड़िया (मुख्य मंत्री)—माननीय अध्यक्ष महोदय, आज वर्तमान राजस्थान विधान सभा की यह आखिरी बैठक है । इसके बाद हम लोग फिर मिलेंगे यहां पर, लेकिन एक वृहत्तर रूप में मिलेंगे । यहां आज जो मैं बोलने के लिये खडा हुआ हूं वह कोई बिदाई सम्मेलन की तरह नहीं क्योंकि बिदा एक माने में सिवाय श्री बृजसुन्दर जी के और कोई नहीं हो रहे हैं । उनका चुनाव क्षेत्र, जहां से वे चुनकर आये थे वह मध्यप्रदेश में जा रहा है । बाकी सब यहीं रहते हैं बल्कि और बढ़ेंगे । तो मेरा कहने का मतलब यह है कि वर्तमान स्वरूप बदल कर एक वृहत्तर स्वरूप होगा जिसमें कुछ और साथी बढ़ेंगे सदन में और हम लोग आगे मिलेंगे, शायद महीने डेढ़ महीने में, तब फिर स्वागत करने का अवसर होगा, दूसरे साथियों का । लेकिन इस अवसर पर जब कि इस विधान सभा की यह आखिरी बैठक है, मैं समझता हूं हमारे इन पिछले ४॥ वर्षों के अन्दर जो एक साथ मिलकर हमने काम किया उसके लिये दो शब्द कहना उपयुक्त होगा ।

[श्री मोहनलाल सुखाड़िया]

राजस्थान के अन्दर जन-तंत्र का यह पहला परीक्षण था । बड़े पैमाने पर यहां लोग अलग २ जगहों से चुनकर आये और हम लोगों ने यहां पर काम शुरू किया । मैं समझता हूं, पिछले साढ़े चार साल में हमने सदन में जो काम किया उसका दूर २ तक असर है । हमने ऐसे कानून बनाये जिनका लाखों आदमियों की जिन्दगी पर असर पड़ा और कई प्रकार के परिवर्तन कानूनों के अन्दर करने के फैसले हमने यहां किये । उन पर जो क्रियाएं और प्रतिक्रियाएं राजस्थान में हुई उनमें जाना इस समय मेरे लिये उपयुक्त नहीं है, लेकिन बहुत बड़े फैसले हमने किये पिछले साढ़े चार साल में । इसके साथ ही क्योंकि यह पहला ही मौका था, राजस्थान के लिये, हम नवीन परीक्षण कर रहे थे जो अब वास्तविक बन गये हैं । यहां पर पहले के कोई ट्रेडीशन्स नहीं थे, नये ट्रेडीशन्स करने थे या दूसरों के ट्रेडीशन्स पर हमको चलना था । मैं समझता हूं पिछले वर्षों का लेखा जोखा लें तो राजस्थान विधान सभा ने जो कुछ किया आपकी अध्यक्षता में, अध्यक्ष महोदय, उस पर हम अपने आपको गौरवान्वित समझते हैं (करतल-ध्वनि)

यह सही है कि बहुत से मौकों पर इस सदन के अन्दर काफी तनाव की स्थितियां पदा हुई पर आखिर जाकर के हम लोग आपसी मेलजोल से किसी न किसी निर्णय पर पहुंचे, या जो कुछ भी फैसला हुआ, एक पक्ष को पसंद आया और दूसरे को न आया हो, फिर भी सारी स्थितियों में यह सदन बराबर काम करता रहा । कुछ चीजें हो सकती हैं कि ऐसी भी हुई हों जो बहुत से साथियों को पसंद नहीं आई हों और इसकी वजह से नाराजी भी हुई हो, पर उन सबके बावजूद आपस का रिश्ता ठीक तौर से कायम रहा और जो कटुतायें और जगह आ जाती हैं वे इस सदन में नहीं आई ।

मैं यह उम्मीद करके चलता हूं कि इस सदन के बाद दूसरे सदन में हम मिलेंगे, वहां और भी अधिक अच्छे संबंध कायम होंगे और काम ठीक तरह से चलेगा ।

अध्यक्ष महोदय, इस मौके पर मैं यह कहे बिना नहीं रह सकता कि सदन के उतार-चढ़ाव के मौकों पर आपको काफी कठिनाइयां झेलनी पड़ी हैं पर आपने जो हमारा मार्ग दर्शन किया उसके लिये मैं इस सदन के सभी माननीय सदस्यों की तरफ से आपको धन्यवाद दूं तो अनुपयुक्त न होगा ।

और मैं इस बात को जानते हुए भी कि पिछले दो वर्षों में इस स्थान पर बैठ कर कार्य करने की जिम्मेदारी मुझ पर रही, कई खामियां हो सकती हैं और उन खामियों को जानते हुए भी जो कुछ हमसे प्रयत्न हो पाया उस प्रकार से इस सदन की कार्यवाही चलाने की कोशिश की, उसमें जो खामियां रही हैं उसके लिये मैं सभी सदस्यों से क्षमा याचना करना चाहूंगा और आम तौर से जो सहयोग सबसे प्राप्त हुआ उसके लिये धन्यवाद देना चाहूंगा और इस सदन में सबने मिलकर कार्य किया उसके लिये मैं सबका आभारी हूं उन्होंने मदद दी इस चीज के अन्दर कि राजस्थान के अन्दर एक वैधानिक तरीके से, कानून के जरिये, विधान सभा के द्वारा किस प्रकार से कार्यवाहियां की जा सकती हैं, इस ओर लोगों का ध्यान है, आंखें हैं और एक जागृति राजस्थान में इस विधान सभा की चर्चाओं से फैली है जो जनतन्त्र के लिये एक आवश्यक चीज है, जो चर्चाएं यहां होती हैं उनसे लोगों के अन्दर इस भावना का आभास होता है कि उनको कहने का अधिकार

[श्री मोहनलाल सुखाड़िया]

हैं जहां वे सब कुछ कह सकते हैं। तो यह सदन न केवल चर्चा का स्थान रहा है बल्कि राजस्थान की जन-जागृति के अन्दर भी इस सदन ने एक हिस्सा अदा किया है।

मुझे अधिक कुछ नहीं कहना है अध्यक्ष महोदय, इस मौके पर, जैसा कि मैंने शुरू में निवेदन किया यह ऐसा अवसर नहीं है कि हम फिर नहीं मिल रहे हैं, हम बहुत जल्द मिल रहे हैं।

अन्त में, एक बार फिर सभी सदस्यों के प्रति उस सहयोग के लिये अपना आभार प्रदर्शित करना चाहता हूं कि जो वे समय समय पर, मुझे और मेरे साथियों को सहयोग देते रहे हैं। जय-हिन्द

श्री जवानसिंह—माननीय अध्यक्ष, मैं इस ओर बैठे हुए माननीय सदस्यों की ओर से माननीय सदन के नेता के साथ में, एक स्वर में तमाम साथियों ने सहयोग और सहृदयता हमारे साथ में बरती है उसके लिये धन्यावाद देता हूं।

माननीय अध्यक्ष महोदय, आपने जिस प्रकार से ऊंचे स्तर पर हमको वक्त-वक्त पर मार्ग दर्शन दिया है उन सबके लिये आपको और साथ ही में हमारे असेम्बली सेक्रेटेरियेट के काम करने वाले और लोगों ने जिस प्रकार हमें सहयोग दिया है उन सब को धन्यवाद दिये बगैर नहीं रह सकता।

यह बात सही है कि इस ओर बैठने वाले साथियों का कुछ कार्य हो इस प्रकार का है जहां पर चूंकि भिन्न २ सिद्धान्तों को लेकर सदस्य इस सदन में आते हैं और इसलिये सरकार को समय समय पर सही रास्ता, जहां मालूम होता है कि दूसरा रास्ता अख्तियार किया जा रहा है, तो सही रास्ता बताने का तरीका अख्तियार किया है। उस वातावरण में कभी कभी कटुता का भी आभास रहा है पर जैसा कि सदन के नेता ने बताया इस कटुता को आगे नहीं बढ़ने दिये बगैर मिल जुल कर हमने यह प्रयत्न किया कि हमारे इस सदन के उद्देश्य हैं, राजस्थान की जनता का अधिक से अधिक हित किस प्रकार से हो, इसके लिये हमने प्रयत्न किया है, इसके लिये कोई इन्कार नहीं किया जा सकता।

तो हमें इस बात की खुशी है कि मौजूदा विधान सभा के सदस्यों के नाते न मिल कर दूसरी बृहद् राजस्थान की विधान सभा में मिलेंगे, अतः इस मौके पर मैं इस ओर के माननीय सदस्यों की ओर से सबको धन्यवाद देता हूं।

श्री भैरूं सिंह (दांता रामगढ़)—माननीय अध्यक्ष महोदय, सदन में इस समय जो वातावरण बना हुआ है माननीय अध्यक्ष, कुछ ऐसा लगता है कि जिस प्रकार से निश्चित रूप में [illegible] समारोह मनाया जाय। लेकिन मुझे इस बात की हार्दिक खुशी है कि हमारी यह विदाई [illegible] को विदाई न होगी जिस विदाई को हम विदाई की परिभाषा में लें। लेकिन हम भी उसी परम्परा को निबाहने जा रहे हैं जो परम्परा राजस्थान के निर्माण करने वालों ने निभाई है। अध्यक्ष महोदय, जिस समय हमारे इस प्रान्त का निर्माण हुआ था उस समय एक छोटी सी इकाई में था, दूसरी दफा जब जयपुर, जोधपुर और बीकानेर की रियासतें इस राजस्थान प्रान्त में मिलीं तो हमने दूसरा रूप देखा, आज राजस्थान की विधान सभा को इस बात का गर्व है कि राजस्थान की विधान सभा एक विशाल रूप धारण कर के

[श्री भैरूंसिंह (दांता रामगढ़)]

के वृहद् राजस्थान की विधान सभा के रूप में आगे मिलने वाली है और इस कारण से हमें अपने इस रूप से विदाई लेने के रूप में विदाई के समारोह में सम्मिलित हुए हैं ।

अध्यक्ष महोदय, जहां तक हमारे ५ वर्ष के कार्यकाल का प्रश्न है में निश्चित रूप से कहूंगा कि सत्तारूढ़ दल ने और विरोधी दल ने जहां तक संभव हो सका है राजस्थान में ही नहीं बल्कि भारतवर्ष में नई नीति और परम्पराओं को कायम करने में सावधानी बर्ती है ।

आज कोई इस बात से इन्कार नहीं कर सकता कि हमारे देश में इस प्रकार की शासन प्रणाली एक शिशु अवस्था से गुजर रही है, उस अवस्था में चाहे विरोधी दल की ओर से, या सत्तारूढ़ दल की ओर से ही प्रजातन्त्र के ऊपर आघात होता है, तो वह आघात हमारी सारी आगे की विचार धाराओं को मिला कर आघात होता है इसका असर हमारे राजस्थान पर ही नहीं सारे भारतवर्ष के विशाल दृष्टिकोण पर पड़ता है, जिसके द्वारा हम भारत में नहीं बाहर जो लोग हैं उनकी निगाहों में भी आगे बढ़ते हुए प्रान्त के रूप में नजर आते हैं ।

इस सारे कार्यकाल में मैं इस बात को मानता हूं कि विरोधी दल के सदस्यों के कारण से और सत्तारूढ़ दल के कारण से कभी इस बात को भी कटुता आई हो कि हम उस कटुता के कारण बहुत मुमकिन है कि भविष्य में भी कटुता का वातावरण बनाये रखें पर मुझे विश्वास रहा है और है कि इस सदन में जो कटुता आई है वह एक पारिवारिक कटुता के रूप में आई है । परिवार के लोगों में संकट के कारण से या और कारणों से झगडा होता है, उस झगड़े के बारे में बात हो जाय और झगडा समाप्त हो जाय और समाप्त होते ही उस परिवार का एक व्यक्ति उस परिवार के दूसरे व्यक्ति के साथ आपस में दोनों को एक ही परिवार के व्यक्ति मानकर पहले हो की तरह सौहार्दता के साथ पेश आता है उसी प्रकार इस सदन के सभी सदस्य सदन के अन्दर और बाहर एक परिवार के भाई २ का सा नाता बर्ता है, अगर कटुता पैदा हुई भी तो बातचीत के समाप्त होते ही उसे भूल गये । मैं उम्मीद करता हूं कि उसी नाते को भविष्य में भी हम लोग बनाये रख कर राजस्थान की सेवा कर सकेंगे ।

ऐसे जो वातावरण हमारे यहां बने उनमें माननीय अध्यक्ष, मैं निश्चित रूप से कहता हूं कि आपकी ओर से समय समय पर हमें मार्गदर्शन मिला है और वह किसी भी समय भुलाने को बात नहीं है । जहां तक अध्यक्ष पद का नाता होता है, मैं समझता हूं कि सदन में स्वस्थ परम्परायें डालने के लिये, सदन में स्वस्थ जनतंत्र को सफल बनाने के लिये उनका वास्तविक नेतृत्व हमें हमेशा मिलता रहा और उनका स्थान सबसे बड़ा रहा है । मुझे इस बात का विश्वास और गर्व है कि अगर इसी प्रकार से इन्हीं अध्यक्ष के नीचे भविष्य में भी वातावरण बना रहा तो, यदि हमसे कई भूलें हुई हैं उनको आगे चल कर हम, जिस प्रकार की परम्पराओं में पनप रहे हैं, भूलों में निश्चय रूप से सुधार कर लेंगे और अवश्य सुधार होगा । इन्हीं शब्दों के साथ मैं सदन के सभी सदस्यों और खास तौर से मेरे लिये, क्योंकि मैं सदन में विरोधी दल में रह कर कई दफा, कई माननीय सदस्यों की आंखों में खटका हूंगा लेकिन मेरा दृष्टिकोण एक ही था, कि मेरे कटु वचनों के कारण से यदि सरकार में या राजस्थान की जनता में किसी

[श्री भैरूंसिंह (दांता रामगढ़)]

प्रकार की कठिनाई हो उसको दूर करने की चेष्टा की जावे और इसी दृष्टिकोण से विरोधी दल के सदस्य सभी जगह काम करते हैं और मैंने भी स्वयं काम किया है। यदि किसी सदस्य को मेरे कटुवाक्यों से कोई बात खटकती हो तो मैं माननीय अध्यक्ष, आपके द्वारा क्षमा चाहता हूं और यह निवेदन करूंगा कि कम से कम इन ५ वर्षों की बातों को आगे के लिये भूल जावें। आगे जिस प्रकार का वातावरण होगा उसके लिये सावधान रहेंगे। लेकिन इस संबंध में माननीय मुख्य मंत्री और उनके पहले के मुख्य मंत्री श्री टीकारामजी पालीवाल और श्री जयनारायण जी व्यास ने जो सदन के नेता रहे हैं, उनके सारे कार्यकाल में अनुभव किया वह यह है कि चाहे कितने भी कटुवाक्य कहे हों या आलोचना की गई हो लेकिन उनकी तरफ से वही भाई-चारे का बर्ताव रहा है जैसा कि जनतन्त्रवाद में दूसरी जगह होता है। मैं समझता हूं कि यह आगे के लिये एक बहुत अच्छी चीज है और हम आगे भी इसको याद रखेंगे और इसी प्रकार से कार्य करते रहेंगे। इन बातों की आशा रखता हुआ मैं अपना स्थान ग्रहण करता हूं और सदन के सभी सदस्यों और अध्यक्ष महोदय व सदन के नेता जिन्होंने विशेष सहयोग दिया धन्यवाद देता हूं।

(करतल-ध्वनि)

श्री जयनारायण व्यास—अध्यक्ष महोदय, मैं समझता हूं कि आज जबकि हम इस सदन के आखिरी दिन मिल रहे हैं, मुझे दो एक शब्द कहना चाहिये।

सबसे पहली बात जो मैं अर्ज करना चाहता हूं वह यह है कि चाहे ये ही व्यक्ति हों, चाहे कुछ और व्यक्ति हमारे साथ जुड़ जावें लेकिन इस सत्र के बाद में इस सदन की बैठक होनेवाली है वह एक दम नया सदन होगा। नया सदन केवल व्यक्तियों से ही नहीं होता बल्कि उसके लिये और भी बातों का होना आवश्यक है। वैसे तो हमारे यहां विधान सभाएं पहले भी थीं जब हम देशी राज्यों में थे। बीकानेर में विधान सभा १९११ से काम कर रही है थी, लेकिन उस विधान सभा में और आज जो विधान सभा मिल रही है उसमें फर्क है और वह यह कि वह विधान सभा राजाओं के नीचे, एकतन्त्र शासन के नीचे काम कर रही थी और हम प्रजातन्त्र के नीचे विधान सभा बुला रहे हैं और काम कर रहे हैं। इस विधान सभा में भी एक चीज थी वह यह कि हमारे यहां राजप्रमुख थे हमारे राज-प्रमुख बहुत ही अच्छे व्यक्ति हैं और मैं समझता हूं कि उन्होंने जिस तरीके से विधान सभा में, क्या सरकार में और क्या आप लोगों के साथ व्यवहार किया उसके लिये हमें उनकी प्रशंसा करनी चाहिये। यह सब होते हुए भी यह राजप्रमुख का पद इस संस्था के लिये, हमारी सामन्तवादी स्मृतियों को जरूर कायम रखती थी और आज हमारे लिये बहुत प्रसन्नता की बात है कि हमारे यहां के राजप्रमुख को आज हमने अखबार में पढ़ा है कि उनको यू. पी. के गवर्नर बनाया जा रहा है, यह एक बहुत अच्छी बात है। (हर्ष-ध्वनि) मैं उनको इसके लिये बधाई भी, जिस समय बाकायदा सूचना मिलेगी, दूंगा भी, लेकिन गवर्नर होना एक बात और राजप्रमुख होना दूसरी बात है। राजप्रमुख की संस्था हटाई गई है यह भी हमारे प्रजातन्त्रवाद संपूर्ण करने में योग है अच्छा तो यह होता कि हमारे राजप्रमुख को ही गवर्नर बनाया जाता मगर वे दूसरी जगह जा रहे हैं यह भी एक अच्छी बात है, क्योंकि इससे भी शंका बनी रह जाती कि हमारे यहां राजप्रमुख का ही शासन चला आ रहा है। वह शंका भी किसी को नहीं

[श्री जयनारायण व्यास]

होगी। इसलिये गवर्नर के होने से हम यह कह सकते हैं कि हमारी स्टेट फुल्ली डेमोक्रेटिक स्टेट है, इस बात को हमें याद रखना चाहिये ताकि आगे जब हम मिलेंगे तो हमारी दूसरी तरह की स्टेट होगी ।

एक चीज यह है कि हम पहले बिल्कुल नये ढंग से आये उस समय हमको वैधानिक विषयों की वाक्फियत कम थी, पार्लियामेन्टरी परम्परायें किस तरह होनी चाहिये, उनका प्रदर्शन किस तरह से होना चाहिये और नियमों को किस तरह से निभाना चाहिये इन सारी बातों से हम वाकिफ नहीं थे । इसके साथ साथ पार्लियामेन्टरी डिसीजन किस तरह लेना चाहिये यह भी हमको सीखना पडा । कैसे बोलना चाहिये यह भी हमको सीखना पडा । क्योंकि इसके पीछे हमारी पृष्ठ भूमि थी । इसमें राजाओं का, भू-स्वामियों का और दूसरे आपसी झगड़े और विरोध की परस्पर द्वेष भावनाएं चल रहीं थीं, चाहे वे किसी कारण से हों, चाहे जातीय कारणों से हों लेकिन यह सब पृष्ठ भूमि थी । ये सब बातें होते हुए भी हम नई विधान सभा में आकर बैठे और बैठ कर शुरू शुरू में अच्छे ढ़ंग से उसे नहीं चला सके तो इसमें कोई अफसोस की बात नहीं । हमने यहां आकर बहुत सी बातें सीखी हैं । किस तरह से बोलना चाहिये, किस तरह से अदर मेन्स पोइन्ट ओफ व्यू को सोचना चाहिये इसको भी जानने की कोशिश की है । यद्यपि हमारे प्रजातन्त्र की अवस्था शैशव है फिर भी हम कह सकते हैं कि हम निरे बच्चे नहीं हैं । हम जानते हैं कि हम तगड़े हैं और हम लड सकते हैं और हमारे में जोश है । वे बातें तो अभी हमारे में नहीं आई हैं जो जवानों में होती हैं लेकिन वे भी आवेंगी । जिस प्रकार फुटबाल के खेल में लोग कभी २ जोश में आकर फाउल प्ले भी खेल देते हैं, कभी रेफरी भी भीड ज्यादा होने के कारण गलती से विसिल बजा देता है तो ये बातें हैं । लेकिन मैं भविष्य के चिन्ह देखता हूं जो मुझे अच्छे दिखाई देते हैं और मुझे कोई संदेह नहीं की राजस्थान का भविष्य अब उज्वल नहीं ।

अध्यक्ष महोदय, प्रजातन्त्र में वैज्ञानिक रीति-रिवाज भी कोई चीज है । प्रजातन्त्र को कायम रखने के लिये और मजबूत बनाने के लिये यह आवश्यक होता है कि हम खुद वैज्ञानिक रीति-रिवाज के द्वारा प्रजातन्त्र को सचेत करें । हम यहां पर जो भी बातें करते हैं उसमें हमने वैधानिक रीतिवाद को समझा है, लेकिन प्रजातन्त्रवाद के बारे में हमें अभी बहुत सीखना बाकी है । प्रजातन्त्र को साधारणतः A vote by Ayes, a decision by majority ही समझते हैं । मगर वास्तव में यह बात नहीं है । बल्कि इसमें सबसे पहली बात है वह यह है कि विचार-विनिमय । बात चीत करके और आपस में डिस्कस करके किसी बात को तय करना । इसका मतलब यह होता है कि जहां तक हो सके आपस में बैठ कर, विचार करके उसको तय किया जाए। विचार-विनिमय का अर्थ होता है कि अच्छे से अच्छे विचार उस विषय पर जो हमारे सदन के सामने होता है देने चाहियें और उससे सही परिणाम पर लाने की कोशिश करनी चाहिये । मेरा खयाल है कि हमने इस दिशा में कुछ उन्नति भी की है और काम भी किया है । फिर भी यह स्वीकार कर लेना चाहिये कि हम विचार-विनिमय में इतने विवेकी नहीं रहे जितने की हमको रहना चाहिये । आज इंगलेंड जैसी विधान सभा में दूसरी तरह के ट्रेडीशन पड गये हैं जो यहां पर नहीं हैं, हमें उनको कायम करना होगा ।

[श्री जयनारायण व्यास]

आप विरोधी पक्ष के रोल को ले लीजिये । वह भी सभी जगह होता है और उसकी आवश्यकता समझी जाती है । लेकिन इसके साथ २ विरोधी पक्ष भी अपने उसूलों पर चलता है और जो बातें उसे कहनी होती हैं, वह कहता है । यही नहीं कि जो सत्ताधारी पक्ष कहता है उसका विरोध ही करे और वह भी केवल विरोध के लिये विरोध करे, यह विरोधी पक्ष का कर्त्तव्य नहीं । विरोधी पक्ष या इस पक्ष द्वारा जो भी बातें कही जाती हैं उनको सुलझाने के लिये अपना दृष्टिकोण रखता है । इस प्रकार की परम्परायें हमारे सदन में कायम जरूर हो रही हैं किन्तु पूरी तरह से कायम होने में अभी समय लगेगा । इसी प्रकार सत्ताधारी पक्ष में, जिसका नेतृत्व करने का मौका मुझे भी प्राप्त हुआ था, सत्ताधारी पक्ष में केवल मंत्री लोग ही नहीं बल्कि आगे बैठने वालों के साथ साथ हम लोग जो पीछे बैठे हैं उन सब से मेरा मतलब है, उनके दिमाग में यह बात रहती है कि विरोधी पक्ष कहीं ऐसा न हो कि गडबडी कर जाय, वैसी हालत में सत्ताधारी पक्ष अपने हैंड्स की ओर ज्यादा ध्यान देता है । उसको हमेशा यही डर बना रहता है कि कहीं हमारे हैंड्स में कमी न हो जाय, इसलिये वह उनके छिद्रान्वेषण की तरफ ज्यादा खयाल रखता है । इस प्रकार को जो भय की परम्परा और वातावरण बना रहता है, मैं समझता हूं, इस प्रकार की स्थिति में हमें बाहर आना पडेगा । हम विरोध करें जरूर विरोध करें किन्तु हमारा विरोध उसूलों के आधार पर हो । विचार जो हम रखें वे विचार होने चाहिये ईमानदारी के न कि खींचकर इधर उधर से लाये हुए विचार । साथ साथ हम अ उट वोट कर दें विरोधी पक्ष को तो यह भी हमें करना है तो एक डिसीप्लिन के नाते करना पडेगा । कभी कभी हमने देखा है ऐसी संस्थायें भी होती हैं जहां विरोधी पक्ष के दृष्टिकोण को और दूसरे व्यक्तियों के दृष्टिकोण को सोचना पडता है, वहां यह भी खयाल किया जाता है कि पहले विरोधी पक्ष को कोनफीडेन्स में लिया जाय बातचीत करके जहां तक हो सके सदन के अन्दर कटुतापूर्ण शब्दों का प्रयोग न हो और आपस में मिल कर कुछ तय कर लिया जाय ये बातें सदन में न होकर सदन के बाहर ही हो जाती हैं ताकि कई उलझनें आपस की बातचीत से ही सुलझ जाती हैं, इससे जहां सदन का वातावरण ठीक रहता है वहां समस्याओं के सुलझने में भी समय का अपव्यय कम होता है । लेकिन इस दिशा की ओर हमें ज्यादा तेजी के साथ कदम बढ़ाने की आवश्यकता मैं महसूस करता हूं ।

मेरा ख्याल है जब मैं यह बातें कहता हूं तो केवल विरोधी पक्ष के लिये ही ये बातें कहता हूं सो बात नहीं । सत्ताधारी पक्ष है उस पक्ष के लोग भी किसी किसी विषय पर कभी कभी ऐसा समझते हैं कि जो मंत्रीमंडल बातें करता है, उसमें खामी है या मंत्रीमंडल ज्यादती कर रहा है तो सत्ताधारी पक्ष के लोग हैं वे विरोधी पक्ष की तरह विरोध नहीं कर सकता, लेकिन उसको भी स्वतंत्रता होती है अपने विचारों को व्यक्त करने की । वह पार्टीज के अन्दर अपने विचार रखता है, वहां अपने संशोधन प्रस्ताव आदि रखता है । और सदन में भी वह अपने विचार रख सकता है, किन्तु अपने प्रस्ताव या संशोधन को मंजूर करवाने के लिये प्रेस नहीं करता, ऐसी हालत में वे अपने विचार रखकर अपने संशोधन या प्रस्ताव या बजट के समय कटमोशन के रूप में रखता है उनको वापिस लेता है ताकि उसके विचार जो हैं वे व्यक्त हो जायं ।

प्रजातंत्रवाद में विचार रखना ही बहुत महत्व रखता है, जो लोग विचारों से डरते हैं वे डेमोक्रेसी से भी डरेंगे । अगर हम विचारों से डरने लग गये तो हमको विचारों को बन्द करना पडेगा, रोकना पडेगा

[श्री जयनारायण व्यास]

और यदि विचारों का व्यक्त होना रुक गया तो फासिज्म आगया। फासिज्म जो राजाशाही से भी ज्यादा खतरनाक होगा। राजा नाम से जो एकतन्त्री शासन चलता था फासिज्म के नाम से तो और भी खराब शासन रहेगा। वैसी हालत में विचारों से डरना चाहे वे सत्ताधारी पक्ष के विचार हों या विरोधी पक्ष के उनसे डरने की आवश्यकता नहीं क्योंकि विचार ज्यों ज्यों आयेंगे सुलझे हुए तरीके से आयेंगे जो अन्त में जाकर हमें सही और स्थिर रास्ते की ओर ले जाने वाले होंगे; तभी सही मायने में प्रजातंत्रवाद कायम कर सकेंगे।

हमने अपने इन वर्षों में बहुत सारी समस्याओं का हल किया है। उसमें सबसे बडी समस्या का जो हल हुआ है वह है जागीरों की समाप्ति का। और वह हल हुआ आपसी समझौते से और आपसी मेल-जोल के रास्ते से। यह हमारी डेमोक्रेसी का नमूना था। आगे जाकर एकाध पोइन्ट पर मतभेद हुआ जो सदन में भी व्यक्त हो गया। यह बडा काम इस अर्से में हुआ है। इसके साथ साथ इसकी प्रतिक्रियायें भी हुई; वे प्रतिक्रियायें इस प्रकार कि जो जागीरदार लोग हैं अपना कम्पेन्सेशन लेकर घर पर बैठ गये, कई लोग जो जागीरदारों के आश्रित थे उनको दिक्कतें हुई। कुछ लोगों को जो सरकारी तरीके से नौकर थे उनको एब्जोर्ब कर लिया गया या उनको एब्जोर्ब करने की कोशिश कर रहे हैं और शायद कुछ रह भी जायेंगे। इसके अलावा बहुत सारे जो घरेलू नौकर थे उनको काम पर लगाने की दिक्कत है, इससे बेकारी भी फैलने लगी है। मैं समझता हूं इस सदन में नहीं तो आगे आने वाले सदन में जो हमारे हाउस के नेता हैं उन पर मुनस्सर है। जहां तक नेता का सवाल है यह निश्चित बात है कि हमारे वर्तमान नेता हैं वही रहेंगे, उनको इन समस्याओं की ओर तीन चार महीने में ध्यान देना पडेगा। जो लोग जागीरें समाप्त होने के बाद में तकलीफ में पड गये उनको किसी न किसी तरह से काम पर लगाना चाहिये। खास तौर से छोटे जागीरदारों की समस्या को हल करने की कोशिश की जा रही है उसमें भी हमें उनके साथ सहानुभूति पूर्वक बरताव करना पडेगा।

हमारे राजस्व विभाग से संबन्धित बहुत सारे कानून कायदे पास हुए हैं जो किसानों की तकलीफें मिटाने वाले हैं। मैं समझता हूं कानून कायदों के बारे में हमें बहुत सावधानी के साथ आगे का बरताव रखना पडेगा। ताकि किसान इन कानून कायदों के होते हुए उलझन में न फंस जायें। क्योंकि कानून कायदे जो होते हैं दुधारू तलवार की तरह होते हैं। कोई भी प्रकरण छिड जाता है तो उसका अन्त नहीं होता है। इसके अलावा इसमें एक चीज की कमी अवश्य है, वह कमी अवश्य पूरी होनी चाहिये। हमने अभी सीलिंग मुकर्रर नहीं किया। सीलिंग कमेटी ने अपनी रिपोर्ट पेश की अथवा नहीं, यह मेरे ध्यान में नहीं आयी है। अगर सीलिंग मुकर्रर हो जाता है तो हमारी बहुत सारी समस्याओं का हल हो जाता है। हरएक को खुदकाश्त की भूमि मिल सकेगी, मुआवजा मिलेगा सो तो ठीक है किन्तु बहुत सारे ऐसे लोग हैं जैसे भूस्वामियों का आन्दोलन होता है, उसमें एक छिपी हुई बात यह रहती है कि हमको तो दस बीघा जमीन है वह भी हम से छीन ली गई है, लेकिन जिनके पास हजारों बीघा जमीन है और वह भी चाही है बहुत अच्छी जमीन है फिर भी उनको हटाया नहीं जाता, यह बात ठीक नहीं है। पहला हमें जो काम करना है वह यह कि सीलिंग मुकर्रर कर लिया जाय और उसके बाद समुचित रूप से भूमि का वितरण हो जाय। सीलिंग यदि हम मुकर्रर कर देंगे तो भूमि संबन्धी समस्यायें जितनी भी हैं

Page No.10

[श्री जयनाराण व्यास]

वे करीब करीब हल हो जायेंगी । उसके बाद भूमि संबंधी समस्या हमारे सामने नहीं रहेगी। समस्यायें तो और भी कितनी ही हैं, अगर सभी समस्याओं पर बातें रखने लगूं तो समय इसी में हो जायगा। इस प्रकार खास कर दो समस्याओं पर मैंने अपने विचार सदन के सामने रखे हैं।

एक चीज, जिसे हम नयी समस्या तो नहीं कह सकते किन्तु जो हमारे लिये गर्व की है उसे उल्लेख न किया तो गलती करूंगा । वह है हमारी प्रथम पंचवर्षीय योजना। प्रथम पंचवर्षीय योजना हमारे सम्मुख थी उसकी मंजूरियां होने में दिक्कतें आयीं, फिर भी बहुत सारे काम प्रथम पंचवर्षीय योजना में पूरे हो गये। द्वितीय पंचवर्षीय योजना का काम भी समय पर पूरा हो जायगा। खास तौर से मैं सामुदायिक विकास योजना, विस्तार सेवा खंड जो कायम किये जा रहे हैं वह एक सुन्दर चीज है । मैं माननीय सदस्यों से प्रार्थना करूंगा कि इन सामुदाकि योजनाओं में और पंचवर्षीय योजना में जहां जहां योग दे सकें सहयोग दें। सामुदाकि योजना ऐसी वस्तु है; विस्तार खंड वगैरह जिसमें जनता के सहयोग के बिना आगे नहीं बढ़ सकते। कई लोग बडी बडी बातें करते हैं, वे कहते हैं यह महकमा सामुदायिक योजना का सरकारी महकमा है।

वास्तव में कम्यूनिटी प्रोजेक्ट कोई महकमा नहीं है बल्कि वह तो एक व्यवस्था है जिसमें जनता के सहयोग से और सरकार के सहयोग से हम कुछ आगे बढ़ें और अन्त में जाकर वह सहयोग करने वाली संस्था सरकार के रूप में परिणत हो जावे। वह काम करने वाला विलेज लेवल वर्कर्स ग्राम कार्यकर्त्ता आगे जाकर जिस योग्यता के हों उसी योग्यता के बन कर धीरे धीरे शासन के अन्दर उनका हाथ हो जावे। लेकिन सरकार से यह कहना है कि वह भी इस बात को ध्यान में रखे कि योजना को महकमे के तौर पर न बरत कर महकमे की जो बुराइयां होती हैं उनसे दूर रक्खे। फाइनेन्शियल चैकिंग न हो, यह तो मैं नहीं कहता पर ऐसी पाबन्दियां नहीं रहनी चाहियें जिससे उनके काम में बाधाएं पडें, और ये काम जल्दी जल्दी करते रहेंगे तो जनता के साथ हमारा सम्पर्क भी अच्छा रहेगा और काम-काज भी हमारा काफी अच्छा बना रहेगा।

मैं खास तौर पर एक शब्द विरोधी पक्ष के लोगों के लिये कहना चाहता हूं। मैं समझता हूं कि विरोधी पक्ष का महत्व जो है वह बहुत ही है और अच्छा महत्व है, कम नहीं है। सत्ताधारी पक्ष से भी विरोधी पक्ष का महत्व ज्यादा मैं मानता हूं, इस मामले में कि विरोधी पक्ष ही ऐसा पक्ष है जो हमें हमारी कमजोरियों और खराबियों को दिखा सकता है। पर जैसा मैंने पहले कहा कमजोरियां और खराबियां दिखानी चाहिये और इसलिये दिखानी चाहियें कि वे खराबियां उस खास विषय में से जो कि हमारे विचाराधीन हैं निकल जावें, पर इसलिये नहीं कि विरोध के लिये विरोध करना है। इंगलैंड जैसे देशों में तो प्राइम मिनिस्टर के बाद में अगर किसी को महत्व दिया जाता है तो लीडर ऑफ अपोजीशन को दिया जाता है। मैं समझता हूं कि वे भी अपने इस महत्व को समझेंगे और अपनी जिम्मेदारियों को भी समझेंगे।

विरोधी पक्ष में आम तौर पर पहले कभी कभी तेजी से भी बातें कहीं गई हैं। हमारी तरफ से भी तेजी से बातें कही गई हैं, उनको वे भूल जावें और हम भी भूल जावें या न भी भूलें तो चिन्ता

[श्री जयनारायण व्यास]

की बात नहीं है। चिन्ता तो इस बात को करनी है कि आगे जाकर विरोधी पक्ष अपने ढंग का बने जो कि डेमोक्रेसी में ठीक तरह से जंच सके और सत्ताधारी पक्ष भी विरोधी पक्ष के साथ इसी तरह अपने को एडजस्ट करने की कोशिश करे।

अन्त में अध्यक्ष महोदय, मुझे आपको बधाई भी देनी चाहिये और धन्यवाद भी। बधाई इसलिये कि यहां कई चीफ मिनिस्टर्स आये और चले गये, पर आप अपने स्थान पर पहले की तरह बराबर कायम रहे। (करतल-ध्वनि)और साथ ही साथ धन्यवाद भी इसलिये कि स्पीकर के जो काम हैं वे कोई बहुत आसान काम नहीं हैं। परम्परा यह कहती है कि जब एक स्पीकर स्पीकर बन जाता है, चाहे वह किसी भी पार्टी का हो इसके बाद में वह पार्टी से अलग हुआ समझ लिया जाता है, डेलीबरेशन्स में नहीं जाते हैं, पार्टी में भी जाकर अपनी राय नहीं देते हैं, और यह आपका हाल हुआ है कि आप न पी.सी.सी. के मेम्बर हो सकते हैं और न कोई पदाधिकारी ही हो सकते हैं सिवाय इसके कि जिस पार्टी से आये हुये हैं उसके चार आना मेम्बर बन जाएं और अपने से सम्बन्धित बातें कह दें। फिर पार्टी की सभाएं भी होती हैं, उनके निमन्त्रण भी दिये जाते हैं। आप सब से ज्यादा सम्मानित व्यक्ति हैं पर निमन्त्रण भी कम मिलते हैं सिवाय ऐसे मौकों पर जो केवल प्रदर्शन से सम्बन्ध रखते हैं, न कि विचार विनिमय से उनमें आप भाग लेते हैं। इसलिये विचार विनिमय से आपको पार्टी भी खारिज कर देती है इसलिये यह संयम की बात है जो आप पर लादी गई है। पार्टी से सम्बन्धित होते हुए भी स्पीकर के लिये क्या सरकारी पक्ष और क्या विरोधी पक्ष दोनों की पूरी पूरी बातें सुननी पडती हैं और दोनों के सम्बन्ध में पूरे पूरे निर्णय भी लेने पडते हैं। उससे दोनों की नाराजगी अन्दर अन्दर होना स्वाभाविक है। तो यह सब होते हुए भी आपने बडी प्रतिष्ठा के साथ काम निभाया है। सब के साथ न्याय किया है और आपने अपने काम को जिस सदाशयता और योग्यता के साथ निभाया है उसके लिये बधाई और धन्यवाद दोनों दे सकता हूं। (करतल-ध्वनि)

मैं समझता हूं कि दो-चार बातें जो मुझे कहनी थी हैं वे यही हैं और मैं आशा यह करता हूं कि जब हम और हमारे अजमेर के मित्र मिलकर नये सदन में जो गवर्नर प्रोविंस हमारा यह बन जावेगा तो उस नये सदन में जो २ भूलें हमने अब तक की हैं उनको, जैनियों की भाषा में मैं कहूं कि उनका प्रतिक्रमण करके और आइन्दा वे भूल न करने की सोच कर हमारा जो सदन है, उसकी जो परम्परायें हमने बनाई हैं उनके साथ चलें, नये उत्साह और साहस के साथ चलें और एक दूसरे के विचारों को समझते हुए, उनका आदर करते हुए हम आगे चलें। मैं इन्हीं आशाओं के साथ ये शब्द इस समय कहना चाहता हूं।

श्री वेदपाल त्यागी--माननीय अध्यक्ष, मैं समझता हूं कि इस अवसर पर जब कि हम आखिरी मरतबा इस सदन में इस रूप में मिल रहे हैं, मैं भी अपने दो शब्द सदन के समक्ष पेश करूं और इस कारण नहीं कि मैं अपोजीशन में कोई स्थान रखता हूं बल्कि इसलिये कि मैं चुन कर आया उधर से और जा इधर से रहा हूं और इस बीच में कई ऐसे काण्ड हुए कि जिनमें एक दूसरे को सही तरीके से न समझने के कारण, सम्भवतः एक दूसरे के प्रति कुछ खराब फीलिंग लेकर हम बिदा हों, इसलिये इस अवसर पर मैं यह कह देना चाहता हूं कि यद्यपि अपोजीशन में बैठकर गवर्नमेन्ट को क्रिटिसाइज करने के बहुत अवसर आये और कहीं २ ऐसे अवसर भी आये कि जहां किसी व्यक्ति विशेष के संबंध

Page No.12

[श्री वेदपाल त्यागी]

में कुछ खास बातें कही हैं और कुछ प्रस्ताव भी पेश करने पड़े हैं, तो बावजूद इन सब बातों के जब हम विदा हो रहे हैं तो मैं अपनी तरफ से विश्वास दिलाना चाहता हूं कि किसी कटुता की भावना से हम यहां से रवाना नहीं हो रहे हैं बल्कि जिस तरह से यहां बैठकर, इधर और उधर बैठकर काम किये, बड़े२ काम किये, बड़े २ लेजिस्लेचर्स और प्रस्ताव पास किये, जिनसे कि हमारी प्रान्त की सामाजिक व्यवस्था भी कुछ बदली है, हमारे देश की भी बदली है और जैसा कि व्यासजी ने अपने विचारों में व्यक्त किया कि हरेक व्यक्ति का कर्तव्य है कि जब देश का निर्माण होने जा रहा हो उस वक्त हरेक व्यक्ति यथाशक्ति इसमें सहयोग दे, तो मैं विश्वास दिलाना चाहता हूं अपनी तरफ से और इधर बैठने वालों की तरफ से, मेरे दूसरे साथियों ने भी जो कहा है कि इस पहली नवम्बर के बाद हम फिर मीट करेंगे और अच्छे वातावरण में मीट करेंगे क्योंकि इसके बाद बड़ी भारी तब्दीली होने जा रही है और इसके बाद इलेक्शन आने वाले हैं; हम उम्मीद करते हैं कि जब हम बिदा होंगे तो उसी वातावरण को हम वहां पर भी कायम रक्खेंगे। तो ऐसे वक्त में मैं सभी लोगों से, खास तौर पर उधर बैठने वाले साथियों से यही निवेदन करूंगा कि जो कुछ भी बातें यहां अब तक हुई हैं उन्हें भूल जाएं और माथुर साहब से खास तौर से यह कहूंगा कि यदि कोई ऐसी बात हुई हो जिसको वे अभी भी दिल में रखते हों तो अब तो वे निकाल दें।

अध्यक्ष महोदय, आपके प्रति भी मैं कृतज्ञता प्रकट करता हूं कि आपने जिस प्रकार अपोजीशन को प्रोटेक्शन दिया, बावजूद इसके कि अपोजीशन की तरफ से आपके प्रति नो कान्फीडेन्स का मोशन भी मूव किया गया और इसके बाद भी आपका जो रवैया रहा है, वह वास्तव में सराहनीय है और इसके लिये आप बधाई के पात्र हैं।

(करतल-ध्वनि)

अन्त में आपको बधाई देते हुए और गवर्नमेन्ट बेंचेज को भी जिन्होंने समय समय पर अपोजीशन के विचारों का आदर किया है, बधाई देते हुए मैं यह निवेदन करना चाहता हूं कि यदि हम नवम्बर के बाद मिलें तब एक अच्छे वातावरण में मिलें और जो कटु वातावरण गुजर चुका है उसको भूल जायं।

(श्री अध्यक्ष के खड़े होने पर हर्ष एवं करतल-ध्वनि)

श्री अध्यक्ष--राजस्थान विधान सभा के वर्तमान स्वरूप में सदन के सत्र का यह अंतिम अधिवेशन है जिसमें कि हम सब यहां एकत्रित हो रहे हैं। ऐसे अवसर पर हमारी पिछली ५ वर्षों की कार्यवाहियों का एक छोटा सा सिंहावलोकन सारे सदस्य सुनना चाहेंगे। मार्च २९, १९५२, को जब इस सदन की पहली बैठक हुई, उसे आज लगभग ४ वर्ष ८ महीने पूरे होने को आये; इस समय में लगभग ३०० बैठकें इस सदन की हुई। उन ३०० बैठकों में लगभग ७५०० प्रश्न सूचनार्थ सदस्यों ने पूछे। लगभग १६० बिल सरकार की ओर से इस सदन के अन्दर प्रस्तुत हुए जिनमें से १४४ अधिनियम बनकर पारित किये गये, ९ वापिस लिये गये व शेष विचाराधीन हैं। अशासकीय कार्यों में लगभग ९ बिल इस सदन में प्रस्तुत किये गये जिनमें से २ पास हुए और शेष विचाराधीन हैं या वापिस ले लिये गये। इसी प्रकार इस सदन की दो कमेटियां हुई जो जनलेखा समति और प्राक्कलन

[श्री अध्यक्ष]

समिति, पब्लिक एकाउन्ट्स कमेटी और एस्टीमेट्स कमेटी हैं । एक कमेटी प्रिविलेजेज कमेटी के नाम से निर्मित हुई । उन कमेटियों में से प्राक्कलन समिति ने अपनी चार रिपोर्ट्स इस सदन के सम्मुख प्रस्तुत कीं और तीन पब्लिक एकाउन्ट्स कमेटी ने । प्रिविलेजेज कमेटी ने अपनी तीन रिपोर्टें प्रस्तुत की हैं । इन सारे कार्यों का सिंहावलोकन मैं इस दृष्टिकोण से आपके सम्मुख प्रस्तुत कर रहा हूं कि जो दिलचस्पी माननीय सदस्य इस विधान सभा के कार्यों में लेते हैं वह किस प्रकार की है, और किस प्रकार वह अपने क्षेत्रों के अभाव-अभियोगों की चिन्ता रखते हैं, और इस जनतन्त्र को, जिसका कि मुख्य उद्देश्य आपसी समझौते और वार्तालाप के जरिये से शासन करना है उसको चला रहे हैं, इसी दृष्टिकोण से यह स्पष्ट होगा कि राजस्थान काफी अंशों में सफल हुआ है ।

इस विधान सभा के प्रारम्भिक कार्यकाल में जब कि सारे सदन के माननीय सदस्यों के साथ में भी नया ही नया अध्यक्ष निर्वाचित हुआ था तो मेरे सामने एक समस्या थी कि नाम मात्र के बहुमत में, जब कि ८१ शासकीय दल की ओर और ७९ विरोधी दल की तरफ थे, इस प्रकार के सदन के अन्दर जब कि एक से एक योग्य सदस्य इस विधान सभा में थे, विधान सभा के कार्यों को किस प्रकार से चला सकूंगा, किन्तु आप लोगों के सहयोग व सहिष्णुता से और इस सदन की उचित परम्परा को कायम रखने की सदनियत से यह सारा कार्य इन पांच वर्षों तक सुन्दरता पूर्वक चला ।

एक बात जो पिछले प्रारम्भिक वर्षों में मैंने अनुभव की वह यह थी कि हमारे इस देश में जनतन्त्र के सम्यक् प्रसार के लिये यह आवश्यक है कि अच्छा विरोधी दल विधान सभाओं के अन्दर होना चाहिये । सौभाग्य से प्रारम्भिक वर्षों में उस अच्छे विरोधी दल का अभाव नहीं था । एक वर्ष तक जो विधान सभा का सत्र चला, मैं समझता हूं कि सारे माननीय सदस्यों की स्मृति में वह काफी अच्छा रहा और उसमें काफी अच्छे वातारण में हम लोगों ने सारे वाद-विवाद इस सदन के अन्दर संपन्न किये । उसका कारण यह था कि शासकीय दल यदि कोई ऐसा कार्य करे और शासकीय पक्ष, कोई भी सदस्य, यदि अनुपस्थित रहे तो विरोधी दल इतना प्रबल था कि एक दो आदमी इधर से उधर नहीं जायं इसलिये बराबर शासकीय दल को सतर्क रहना पड़ता था । मेरी कठिनाई इससे बहुत कम हो गई थी । जितने भी बोलने वाले सदस्य होते थे उनके लिये व्हिप्स दोनों ओर के जिम्मेवार होते थे । वे जितने नाम देते उतने ही आदमी बोलते, इसलिये सारी कार्यवाही एक बहुत अच्छे स्तर पर और एक बहुत सुन्दर तरीके से चली । वह आपके ही सहयोग से चली । किन्तु परिस्थितिवश जैसा कि हम लोगों ने विधान सभाओं के अध्यक्षों के सम्मेलन के अन्दर तय किया कि विरोधियों की संख्या कितनी होनी चाहिये, संख्या तो ठीक है कि कोरम पूरा होने जितनी होने चाहिये, किन्तु विरोधी दल केवल विभिन्न दलों के समावेश या एकीकरण से विरोधी दल नहीं हो जाता है । वे अमुक विचार-धारा के अनुसार चुने हुए होने चाहिये, और विधान सभाओं के अन्तर्गत बाहर भी एक ऐसी पार्टी होनी चाहिये जो कि अमुक सिद्धांत पर काम करती रहती हो । दुर्भाग्य से हमारे इस प्रान्त में बाहर ऐसी कोई पार्टी नहीं थी जो कि अन्दर और बाहर विरोधी दल का कार्य ठीक तरह से करे । इस कारण से गवर्नमेन्ट के अन्दर अविश्वास का प्रस्ताव आया । इतना तनावपूर्ण वातावरण सदन के अन्दर रहते हुए भी हम लोगों ने विचार विनिमय के अन्दर बड़ी सहिष्णुता से काम लिया और उन क्षणों को पार

Page No.14

[श्री अध्यक्ष]

किया सारे हिन्दुस्तान की आंखें उस वक्त राजस्थान विधान सभा की ओर लगी हुई थीं । उस समय राजस्थान विधान सभा की कार्यवाहियों को समाचारपत्रों में जिन लोगों ने पढ़ा उन लोगों ने आप लोगों की प्रशंसा की ।

लेकिन बाद में ज्यों ज्यों विरोधी दल कम होता गया या इधर के माननीय सदस्य उधर आकर बैठे तो सदन के अन्दर गड़बड़ हुई । मेरे लिये कठिनाइयां बढ़ीं, और उसके बाद में, बहुत सी बातें हुईं, मंत्री मंडल में अविश्वास का प्रस्ताव आया, अध्यक्ष और उपाध्यक्ष के विरुद्ध भी अविश्वास का प्रस्ताव आया और सदन के एक सदस्य के आचरण के बारे में भी जांच करने का प्रश्न आया । मैं आप लोगों को बधाई दिये बगैर नहीं रह सकता, क्योंकि ऐसे तनावपूर्ण वातावरण के अन्दर जब कि ऐसी ऐसी विषम परिस्थितियां आईं उनमें भी हम लोगों का पारस्परिक विचार-विनिमय सदन के अन्दर महदूद रहा । हमारे सदन के विचार-विनिमय के बाद में, हमारे किसी प्रकार के व्यवहार में और हमारे वातावरण में किसी प्रकार की कटुता नहीं आई । यह मैं आप लोगों को बहुत हर्ष के साथ कह रहा हूं कि यह जनतन्त्र के निर्माण में बहुत शुभ लक्षण है कि जब कि सदस्य इस प्रकार से अपनी पारस्परिक कटुता को दूर रखकर देश के हित में शासन के लिये विचार विनिमय करते हैं ।

मैं एक साधारण घटना जो सदन में हुई उसके बारे में भी कुछ शब्द कह देना चाहता हूं और वह यह है कि १० अप्रेल, १९५६ को कुछ असदस्यों ने हम लोगों के इस सदन की कार्यवाही में बाधा डाली । विधान सभाओं के इतिहास में यह एक नया अवसर था कि जब इस प्रकार से कोई स्ट्रेन्जर्स विधान सभा के प्रांगण में कूद पड़ें और उसकी कार्यवाही में बाधा डालें, लेकिन वह अप्रिय निर्णय भी इस सदन को लेना पड़ा, जिसमें उन लोगों को कुछ समय के लिये कारावास का दंड दिया ।

ये सारी बातें आप लोगों के समक्ष इसलिये निवेदन कर रहा था कि इस पांच वर्ष के कार्यकाल में, मैं समझता हूं, ऐसा कोई प्रश्न हमारे सामने बाकी नहीं रहा कि जो रूपान्तर में विधान सभा के समक्ष न आया हो । दूसरी विधान सभाओं के समक्ष तो शायद ऐसे प्रश्न शताब्दियों में आते हों, किन्तु इन पांच वर्षों में हमारे यहां विधान सभा ने ये सारे रूप रंग देख लिये हैं ।

(करतल-ध्वनि)

लेकिन मुझे बहुत हर्ष के साथ कहना पड़ता है कि जैसा कि अभी कहा गया है कि इस सदन में नेता बदल चुके हैं लेकिन अध्यक्ष नहीं बदला । मैं कहता हूं कि जितने भी नेता इस सदन में आये उन सब की इस अध्यक्ष पद के प्रति जागरूकता रही उसके लिये मैं आप सब लोगों को, जो नेता भूतपूर्व और वर्तमान में हैं, आभार प्रदर्शित करता हूं । बिना उनके सहयोग के इस पद के सम्मान को कायम रखना इस जनतन्त्र के युग में नामुमकिन था । मैं राजकीय सचिवालय का भी, जो सारा सहयोग समय समय पर इस सचिवालय को प्राप्त होता रहा है, उसके लिये आभारी हूं जिस तत्परता से हम लोगों ने जो भी सूचना चाही और जो भी सहयोग चाहा वह उसी तत्परता से राजकीय सचिवालय से मिलता रहा है और वह हम माननीय सदस्यों के समक्ष प्रस्तुत करते रहे हैं; समय में, असमय में, कुसमय में जो भी सहयोग चाहा है आप सब लोगों की ओर से उसके लिये मैं राजकीय सचिवालय के कर्मचारियों का आभारी हूं ।

Page No.15

[श्री अध्यक्ष]

साथ ही साथ अपने सचिवालय के उन कर्मचारियों के प्रति भी जिन्होंने विधान सभा की बैठकें एक दिन में दो-दो बार होने पर, बडे असमय में होने पर, जिसके कारण उनको आधी २ रात तक बैठ कर कार्य करना पडता था, कभी भी इस प्रकार कार्य करने में संकोच नहीं किया, हमेशा मुस्कराते चेहरों में इस कार्य को, अपना निजी और व्यक्तिगत कार्य समझ कर कार्य किया, आभार प्रदर्शित करता हूं।

(करतल-ध्वनि)

जनलेखा समिति, प्राक्कलन समिति और विशेषाधिकार कमेटी की रिपोर्ट के बारे में और समय समय पर सिलेक्ट कमेटीज की रिपोर्टों के बारे में मैं अधिक नहीं कहूंगा। जो समितियों के प्रतिनिधि स्वयं हीं इस बारे में जानकारी देंगे। माननीय सदस्य उनको पढते हैं। बाहर, और और विधान सभाओं में भी वे जाती हैं। उन लोगों से हमारे पास उनके अच्छे प्रशंसात्मक पत्र आये हैं, उनसे पता चलता है कि इस सदन के माननीय सदस्यों का वाद-विवाद का स्तर कैसा है और कितना उच्च है।

एक बात और कहना चाहूंगा कि यह विधान सभा का सत्र, जैसा सदन के माननीय नेता ने कहा समाप्त नहीं हो रहा है, वर्तमान स्वरूप इसका समाप्त हो रहा है। यह विधान सभा विकसित रूप में, ऊंचे स्टेटस पर, पार्ट ए के स्टेटस पर एक माह बाद में मिलेगी। उस अवसर के ऊपर मैं यह समझूं कि पिछले वर्षों में जो कार्य हमने किये हैं, उन कार्यों में से जो अच्छे हैं उनको ग्रहण करेंगे; आगे उच्च परम्परा, अच्छी परम्परा से हम कार्य करेंगे।

मैं माननीय सदस्यों को, जो यहां इस समय उपस्थित हैं और वे जो कि सदन में या तो हैं अथवा छोडकर चले गये हैं, या जिन्होंने कोई राजकीय पद ग्रहण कर लिया है उन सबको, जो समय समय पर यहां रहे हैं, एक विशेष निवेदन करना चाहता हूं। मेरे निर्णयों से मुमकिन है किसी सदस्य विशेष को आघात पहुंचा हो, चाहे दाईं तरफ बैठने वाले सदस्य हों, चाहे बाईं तरफ बैठने वाले सदस्य हों, कोई कटुता आई हो तो मैं यह स्पष्ट करदूं कि मेरी कोई उनके प्रति कुभावना नहीं थी। मैंने उनके उठाये हुए प्रश्नों पर जो भी निर्णय दिये इसी भावना को रखते हुए दिये कि जनतंत्र को कैसे विकसित करना है। मैंने इसी भावना से प्रभावित होकर निर्णय इस पद से दिये हैं। मैं आभारी हूं माननीय सदस्यों का कि उन्होंने बिना किसी भेदभाव के, बिना किसी आपत्ति के उन निर्णयों को शिरोधार्य करके माना है। मैं समझता हूं कि यह बडी बात है जो हमारे जनतन्त्र में सर्व प्रथम और सर्वोच्च बात है।

(करतल-ध्वनि)

जो बातें, मैं जिस समय इस पद के लिये चुना गया, उस वक्त प्रदर्शित कीं, वे माननीय सदस्य आज नहीं हैं, उन्होंने कहा था कि जो सदस्य चुने गये हैं अध्यक्ष पद पर वे कांग्रेस की टोपी लगायेंगे वह वहां ठीक नहीं लगेगा। मैं निवेदन करूं, उस वक्त मैंने यह कहा था कि कार्य से उसका अंकन किया जाता है न कि अन्यथा।

इस सदन के माननीय सदस्य, चाहें संयुक्त दल के हों, चाहे रामराज्य परिषद् के हों, उन सब ने ही जो सहयोग, सौहार्द्र, सहिष्णुता इस जनतन्त्र के पवित्र मंदिर में परम्पराओं के निर्माण के लिये

[श्री अध्यक्ष]

प्रदर्शित की हैं उन सबका मैं आभारी हूं और आशा करता हूं कि अब जो वृहत्त राजस्थान, जो कि सन् १९४८ से विकसित होता आ रहा है, पहले मत्स्य बना, फिर पहला राजस्थान बना, फिर जयपुर, जोधपुर, बीकानेर और सिरोही का भू-भाग और मत्स्य मिलाकर बडा राजस्थान बना और अब आबू का भू-भाग और अजमेर इसमें मिलकर इसका स्टेटस बडा होने जा रहा है, इस बडे राजस्थान के नवनिर्माण में, १ नवम्बर से हो रहा है, उसकी विधान सभा में, देश के विकास के लिये, लोगों की आर्थिक, सामाजिक और शैक्षणिक स्थिति को ऊंचा करने के लिये जनतंत्र के इस पवित्र मंदिर में अपने विचार-विमर्श द्वारा अपना सौहार्द्र, सहयोग और सहिष्णुता प्रदर्शित करेंगे और इसी आशा और शुभाकांक्षा के साथ मैं एक बार फिर आपका अभिनन्दन करता हूं ।

(करतल–ध्वनि)

साथ ही मैं यह घोषणा करता हूं कि इस विधान सभा की कार्यवाही अनिश्चित काल के लिये स्थगित की जाती है ।

(तत्पश्चात् सभा की कार्यवाही आज दिनांक २७ अक्टूबर, १९५६ को १२.२८ बजे अनिश्चित काल के लिये स्थगित हुई)

मनसाराम पुरोहित
सचिव,
राजस्थान विधान सभा ।

विधान सभा भवन,
जयपुर,
दिनांक २७ अक्तूबर, १९५६